Indian Council of World Affairs
Sapru House, Barakhamba Road
New Delhi

"बहुपक्षवाद तथा अफ्रीका व एशिया में शांति कायम करने एवं इसे बनाए रखने में इसकी भूमिका "

विषय पर

महामहिम डॉ. मामाडोउ टंगारा

रिपब्लिक ऑफ गाम्बिया के विदेश, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और
प्रवासी गाम्बियाई मंत्री

33वां सप्रु हाउस व्याख्यान

सप्रु हाउस, नई दिल्ली
7 मार्च, 2019

महामहिम राजदूत विश्वनाथन, मैं मानता हूं कि आपने हमारी दुनिया में कुछ समय विताया है और यह दुखद बात है कि आपने गाम्बिया का दौरा नहीं किया क्योंकि ध्यान रहे कि एक समय अंग्रेज, फ्रांसीसी गोबन के बदले गाम्बिया चाहते थे किंतु उन्होंने मना कर दिया। और जब उन्होंने मना कर दिया तो उन्होंने कोर्डोवा का प्रस्ताव दिया था। इसलिए कोर्डोवा अंग्रेजी बोलने वाला और गाम्बिया फ्रेंच बोलने वाला बन सकता था। महानिदेश गवर्नर मुझे सचमुच बड़ी खुशी है कि मैं आपके साथ हूं। राष्ट्रपति कार्यालय के महासचिव , और लोक सेवा प्रमुख, महामहिम, भारत में गाम्बिया उच्चायोग , संयुक्त सचिव, अतिविशिष्ट राजदूत, देवियों और सज्जनों, सभी प्रोटोकॉलो ने उचित पूर्वक और सम्मानपूर्वक देखा।

मुझे खुशी है कि मैं आज आपके बीच यहां हूं और मैं निश्चय ही अफ्रीका पर केन्द्रित रहूंगा। मैं एशिया के बारे में अधिक चर्चा नहीं करूंगा बल्कि मैं अफ्रीका के बारे में बात करूंगा। मैं सचमुच आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने इस अतिविशिष्ट समूह के साथ बातचीत करने का अवसर प्रदान किया।चूंकि हम कूटनीतिक रास्तों से संघर्ष को रोकने के लिए संघर्ष से बचने हेतु स्वीकार्य माध्यमों पर विचार करते हैं , इसलिए मैं मानता हूं कि यह नोट करना और स्मरण कराना आवश्यक होगा कि यह चुनौतीपूर्ण कार्य संयुक्त राष्ट्र महासचिव के जिम्मे है जिस संघ की स्थापना 1945 में हुई थी। 73 वर्ष बीत गए, हमने अपने संगठन को देखा है, संयुक्त राष्ट का विस्तार हुआ है और इसने पूर्व की अपेक्षा अब व्यापक संघर्ष निवारण को प्रदर्शित किया किंतु फिर भी इसकी सफलता की कहानी बहुत कम है। यह एक प्रासंगिक प्रश्न खड़ा करता है कि हमें क्या करना चाहिए क्योंकि लोग संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में अंतर्विष्ट मूल सिद्धांतों से मार्गदर्शित होते हैं जिसके लिए हमें सच्चा होना चाहिए। हम एक स्थापित मध्यस्थता सहायक इकाई में कई राजनेताओं द्वारा दिए गए पेशेवर सुझावों में संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2006 से किए गए प्रयासों को स्वीकार करते हैं और उन्हें मान्यता प्रदान करते हैं जिनमें अन्य बातों के साथ 72 घंटों में ही दुनिया में किसी भी स्थान पर तैनात किए जाने वाले माध्यस्थ विशेषज्ञ के एक आधार टीम को चलाने और प्रबंध करने के लिए सहायता और सलाह प्रदान करना शामिल है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस स्थापित पेशेवर निकाय ने कूटनीतिक माध्यमों द्वारा संघर्ष रोकने अथवा संघर्ष बढ़ने को रोकने में अपने प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है और अदा करना जारी रखेगा ; तथापि समय ने हमें निवारक कूटनीति के अपने कई वर्षों से सीखने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया है और

समय ने हमें इसकी सफलता से सहमत होने अथवा असहमत होने की समझ भी प्रदान की है।

इस दृष्टिकोण से यह संभव नहीं है कि निवारक कार्य करने हेतु संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों और एजेंसियों में एक नयी ललक हो जहां सभी संकेत तर्क दोनों के लिए हो। इस अर्थव्यवस्था की सावधानी अपील करती है किंतु फिर भी हमारे विचार से यह सलाह योग्य है कि हम निवारक कूटनीति और निवारक कार्य के संतुलित दृष्टिकोण रखें। विचार यह है कि हिंसात्मक संघर्ष को रोकने के लिए जबरदस्त रूप से अधिक महंगी मानवीय शांति बनाए रखने वाले पुनर्वास अथवा स्थिरीकरण अभियान हित की अपेक्षा संसाधनों का अपेक्षाकृत कम उपयोग है। तथापि , निवारक कार्रवाई का सिद्धांत विवादास्पद सिद्ध हुआ है और एक सामंजस्य प्रतीत होता है कि कूटनीतिक माध्यम संघर्ष निवारण बेहतर गणनात्मक और राजनीतिक रूप से स्वीकार्य मानक है जिसमें संप्रभु राष्ट्रों और अन्य पक्षों के विचारों को ध्यान में रखा जाता है और यह विवाद व संघर्ष को रोकने में सहायता करता है , जो राज्यों के बीच क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए उत्पन्न होने वाला खतरा हो सकता है।

इन सब को ध्यान में रखते हुए और निरोधात्मक समर्थन के लिए जो हमारे पास निवारक कूटनीति है, हम प्रस्ताव करते हैं कि कुछ मामलों में कार्रवाई-उन्मुख संघर्ष की रोकथाम विचार किया जाना चाहिए और जहां आवश्यक हो , वहां प्रत्येक मामले को परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित किया जाना चाहिए। और फिर हम क्षेत्रीय निकायों के साथ संयुक्त राष्ट्र के सहयोग के बारे में बात करेंगे , और मुझे लगता है कि गाम्बिया का मामला संयुक्त राष्ट्र ईसीओडब्लूएएसऔर हमारे सदस्य राष्ट्रों के बीच एक अच्छे सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। क्षेत्रीय निकायों के साथ संयुक्त राष्ट्र के सहयोग की अवधारणा केवल एक काल्पनिक अवधारणा नहीं है, बल्कि संयुक्त राष्ट्र के चार्टर आठमें कानूनी रूप से सन्निहित अवधारणा है। महासचिव, एंटोनियो गुटेरेस, ने भी शांति निर्माण और शांति अभियानों के संबंध में अपने कई बयानों में इस अवधारणा को दोहराया है। सहयोग की अवधारणा ने हमारे संगठन को क्षेत्रीय तंत्र या एजेंसियों को साथ लेते हुए संयुक्त राष्ट्र के साथ सहयोग करने के लिए निर्धारित किया है, जो क्षेत्रीय तंत्र या एजेंसियां संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य और सिद्धांतों के संगत क्षेत्रीय कार्रवाई और विद्यमान व सक्रिय कार्य हेतु यथा उपयुक्त अंतरराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को बनाए रखने से संबंधित मामलों को देखती हैं।

यद्यपि संयुक्त राष्ट्र चार्टर में क्षेत्रीय व्यवस्थाओं और एजेंसियों की कोई संक्षिप्त परिभाषा विचारपूर्वक नहीं दी गयी है , इसलिए हमें अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने में योगदान देने वाले क्षेत्रीय कार्य हेतु उपयुक्त मामले से निपटने के लिए राष्ट्र समूहों द्वारा किए गए किसी कार्य के लिए लचीलेपन का बेहतर इस्तेमाल करना चाहिए।

अफ्रीका में अफ्रीकी संघ, विकास संबंधी अंत:सरकारी प्राधिकरण (आईजीएडी), पश्चिमी अफ्रीका आर्थिक समुदाय और दक्षिण अफ्रीकी विकास समुदाय (एसएडीसी) जैसे क्षेत्रीय और उप क्षेत्रीय व्यवस्थाओं ने भिन्न संघर्षमय स्थितियों के संबंध में संयुक्त रूप से संयुक्त राष्ट्र के साथ भागीदारी की और यहां मैं आपको गाम्बिया का उदाहरण देना चाहूंगा। आप सभी जानते हैं कि वर्ष 2017 में गाम्बिया में चुनाव हुए थे। चुनाव के पश्चात , राष्ट्रपति ने एक सप्ताह के बाद यू टर्न लेने के लिए हार को स्वीकर कर लिया। इसलिए उस कठिन अवधि के दौरान हमें स्मरण है कि हमने राजदूतों के एक समूह को संगठित किया और हमने उन्हें बताया कि इतिहास में ऐसे निर्धारक क्षण होते हैं जहां आपको निर्णय लेना होता है जैसा कि उस सप्ताह के दौरान हुआ। गाम्बिया अफ्रीका का स्टार था। मुझे स्मरण है कि मैं एक कार्यक्रम में था , यह कार्यक्रम एक पुरस्कार समारोह वाला कार्यक्रम था जिसमें यूएनएफपीए के तत्कालीन

निदेशक स्व. डॉ. बाबाटुंडे ने भाग लिया था , और उन्हें पता नहीं था कि मैं उस हॉल में था और वे कह रहे थे कि एक अफ्रीकी के रूप में उन्हें उस सप्ताह पर बड़ा गर्व था क्योंकि गाम्बिया ने विश्व में एक उदाहरण पेश किया है। 22 वर्ष की एक बड़ी कठोर तानाशाही व्यवस्थाके बाद वहां चुनाव हुए और राष्ट्रपति ने हार स्वीकार की , हमें किसी से भी कुछ सीखना नहीं था , और प्रत्येक व्यक्ति ने इसकी प्रशंसा की एवं किसी ने यह बताया कि मैं उसी हॉल में हूं और मैं खड़ा हो गया। सभी लोग ताली बजा रहे थे। किंतु उन दिनों मैं चिंतित था क्योंकि मैं इस राष्ट्रपति के कार्यकाल में विदेश मंत्री रहा । मैं उनके बहुत करीब था और उन्हें और अपने समाज व गाम्बिया की संस्कृति को जान रहा था , मुझे दीवार पर लिखते हुए पाया गया कि भविष्य बहुत उज्जवल नहीं है। संयुक्त राष्ट्र के स्तर पर भी मुझे शांति स्थापित करने वाले आयोग का कार्य दिया गया जिसकी अध्यक्षता हमारे मित्र कमाउ कर रहे थे। मैंने उनसे कहा कि एक वक्तव्य देना आसान है जहां हम सरकार से कहते हैं कि वह लोगों की इच्छा का सम्मान करे। मुझे राजदूत की नौकरी छूटने का कोई भय नहीं था, महत्वपूर्ण यह था कि लोगों के निर्णय का सम्मान हो। वे शांति स्थापित करने वाले आयोग में गए, उनसे कहा कि एक वक्तव्य जारी करे, किंतु मैंने कहा कि आप कोई वक्तव्य जारी नहीं कर सकते हैं। उन्होंने कहा किंतु राजदूत ने मुझसे बात की और मैं सोचता हूं कि हमें उस सप्ताह के दौरान उनके मत पर विचार करना चाहिए , जहां कहीं भी मैं गया और लोग ताली बजा रहे थे एवं गाम्बिया की प्रशंसा कर रहे थे , मैंने उनसे कहा कि वे सावधान रहें, इस उल्लास में उत्तेजित न हों और उसी दिन उन्होंने यू टर्न लिया।

मैंने सुरखा परिषद् के तत्कालीन अध्यक्ष से मुलाकात की और उन्होंने कहा कि सब कुछ ठीक है। मैंने कहा कि सब कुछ ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं ऐसा क्यों बोल रहा हूं। मैंने कहा कि मैं गाम्बिया निवासी हूं। मैं अपनी संस्कृति को जानता हूं और ऐसे संकेत हैं जब आप उन्हें देखेंगे तो यह उतना उत्साहजनक नहीं है। इसलिए शाम में जब उन्होंने यू टर्न लिया तो सभी ने सोचा कि हो सकता कि मुझे ना बोलना चाहिए। मैं मानता हूं कि लोगों के लिए विनम्र होना और उन लोगों को सुनने के लिए शिष्ट होना महत्वपूर्ण है जो इससे संबंधित हैं , जो हर देश के नागरिक है। आप न्यूयार्क , ब्रुसेल्स, जेनेवा में बैठकर यह नहीं सोच सकते हैं कि आप किसी देश को वहां के निवासियों से अधिक जानते हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हमारे विचारों को सुना जाए और उस पर विचार किया जाए। इसलिए जबउन्होंने निर्णय लिया

कि यहां से यू टर्न लिया जाए तो कमाउ , तत्कालीन शांति स्थापक आयोग उनके पास गए और कहा कि मैं आपसे कहता हूं और उसके बाद अब हमने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को एकजुट करना शुरू किया क्योंकि अकेले गाम्बिया ऐसा करने की स्थिति में नहीं था। क्योंकि जहां आपकी सरकार के पास सभी सैन्य और पुलिस की शक्तियां होती हैं , उनके लिए यह कहना कठिन होता है कि आप उन्हें चुनौती देंगे और जब आप ऐसी चुनौती देते हैं तो एक प्रकार का विद्रोह होगा जो उस सरकार के विरूद्ध कर सकते हैं क्योंकि वे आपको उस जगह खींच कर ले जाते हैं जहां वे इन खेल नियमों में सिद्धहस्त होते हैं। किंतु उसके बाद संयुक्त राष्ट्र ने एक वक्तव्य जारी किया और ईसीओडब्लूएएस का अनुकरण किया गया और हमारे निकट पड़ोसी देश सेनेगल ने भी यह सुनिश्चित करने के लिए सेनाओं को संघटित करने का प्रयास किया कि लोगों का निर्णय माना जाए और एक सबसे महत्वपूर्ण सबक जिसे गाम्बिया के अनुभव से सीखा जा सकता है वह धारणीय शांति कार्यक्रम का तत्काल अनुप्रयोग है कि गाम्बिया सरकार ने ईसीएओडब्लूएएस के बाद राजनीतिक कार्य विभाग के साथ गाम्बिया के लिए शांति स्थापक आयोग द्वारा एक मिशन को शुरू करने के तत्काल बाद इस स्थिति के संदर्भ में पहचान की क्योंकि इस क्षेत्र के सभी राष्ट्र प्रमुख जिनमें राष्ट्रपति बुहारी से लेकर सियरा लियोन के निर्गामी राष्ट्रपति शामिल थे , सभी क्षेत्र यह सुनिश्चित करने के लिए एकजुट हुए कि हम एक और हिंसात्मक विवाद से बचे रहें और यह सुनिश्चित करें कि लोगों के द्वारा दिए गए निर्णय मान्य हों। जब स्थिति कठिन होना शुरू हुई तो अन्य अफ्रीकी देशों को इस प्रक्रिया में शामिल किया गया और इस प्रकार भूमध्यरेखीय गुएना बना जिसने इसमें हस्तक्षेप किया और चाड ने सुकर बनाया , लोगों को यह नहीं पता , किंतु चाड ने तत्काल राष्ट्रपति द्वारा अपने कुछ वाहनों और समानों को वहां से निकालने के लिए उनके द्वारा किए गए कुछ अनुरोधों को सुकर बनाया। इसलिए वही देश था जहां अफ्रीका अपने संसाधनों को संघटित करता है।

ईसीओडब्लूएएस हमारा निकट पड़ोसी था और उनके और संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप के कारण हम एक बड़े संघर्ष से बच गए और तब तत्काल बाद राजनीतिक मामले संबंधी विभाग के शांति स्थापक आयोग गाम्बिया आए। और एक समुचित दुनिया की तरह जहां आपके पास भिन्न संयुक्त राष्ट्र निकायों के बीच कोई सिलो नहीं हो , वे एक साथ सामंजस्य पूर्वक चले ; उन्होंने गाम्बिया में परिवर्तन वाले कार्यक्रम को शुरू करने के लिए प्रारंभिक धन प्रदान किया ,

जिसके कारण सत्य सामंजस्य और क्षतिपूर्ति आयोग व संवैधानिक समीक्षा आयोग की स्थापना के साथ राष्ट्रीय विकास योजना को अंगीकार किया गया। आज हम गाम्बिया में एक बड़े अभिघातक अनुभव के साक्षी हैं जहां सत्य सामंजस्य और क्षतिपूर्ति आयोग के दौरान लोग बाहर आकर वक्तव्य दे रहे है, सत्य स्वीकार कर रहे हैं, किंतु एक राष्ट्र के रूप में और यही हमें चाहिए क्योंकि सच लोगों को मुक्त करता है।

1976 के बाद से मैंने राष्ट्रपति जवारा का एक साक्षात्कार देखा जब वे फ्रांस गए थे , वे इस उल्लंघन के बारे में बात कर रहे थे, किंतु वास्तव में तथ्य यह है कि इसे लागू करने के लिए कोई राजनीतिक इच्छाशक्ति नहीं थी , किंतु इन दो राष्ट्रपतियों के कारण गाम्बिया और सेनेगल के बीच क्षेत्रीय एकीकरण के लिए यह एक ऐतिहासिक परियोजना थी एवं संपूर्ण उप क्षेत्र को इससे लाभ होगा। शांति स्थापक आयोग गाम्बिया में शांति बनाए रखने के अपने सहयोग में अग्रसक्रिय रहा है और साथ ही कमजोर देशों में शांति बनाए रखने के लिए संघर्ष से निकले देशों में शांति प्रयासों को सहायता देने से परे अपना आदेश भी देता है। यह साफ तौर पर सुरक्षा परिषद् संकल्प 2282 और महासभा संकल्प 70262 की तर्ज पर है। धारणीय शांति एजेंडा, जिसमें शांति स्थापना को रोकने वाला संपूर्ण संघर्ष चक्र शामिल है , ने संयुक्त राष्ट्र शांति और सुरक्षा ढ़ांचे में एक नया परिवर्तन किया है। धारणीय विकास हेतु 2030 एजेंडा शांतिपूर्ण और समावेशी समाजों के निर्माण हेतु एक ठोस आधार रखते हुए धारणीय शांति एजेंडे को भी प्रवर्तित करता है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कार्यभार संभालते हुए शांति के लिए अपील की जिसने संघर्ष रोकने और शांति बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। गाम्बिया न तो संघर्ष समाप्ति के पश्चात वाला देश है और न ही पीवीसी एजेंडा में एक संदर्भपरक देश है बल्कि एक ऐसा देश है जो दुर्बल है जहां कार्रवाई के साथ निवारात्मक कूटनीति प्रबल है। आज गाम्बिया एक प्राधिकरण है जो एक हिताधिकारी के रूप में संतुलित निवारात्मक कूटनीति और निवारात्मक कार्रवाई के पक्ष में बोल सकता है। हम एक क्षेत्र में रहते हैं।**(16: 40 to 17.42 अन्य भाषा)**।

हम सभी सुरक्षा परिषद् के सुधार के लिए भारत के साथ हैं जो आज के विश्व की वास्तविकता को परिलक्षित नहीं करता है और अफ्रीका की एक साझा स्थिति है और यद्यपि हमारी एक साझा स्थिति है जिससे हम जुड़े हैं। हम लोगों में से कुछ जो 1965 में बहुत सक्रिय थे, ने पथप्रदर्शक की भूमिका निभाने में भारत की अगुवाई में थे और हम विश्व की

सच्चाई को परिलक्षित करने के लिए सुरक्षा परिषद् के सुधार के एकमात्र और अद्वितीय उद्देश्य के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ में हम सभी जानते हैं कि भारत और अफ्रीका के मजबूत स्वर को सुना जा रहा है जहां भारतीय और अफ्रीकी समूह एक साथ हैं। यही बात न्यायाधीश भंडारी के चुनाव के दौरान भी परिलक्षित हुआ जिसमें यूनाइटेड किंग्डम और अन्य देशों के कुछ उम्मीदवारों के साथअंतिम समय तक प्रतिस्पर्धा बहुत कड़ी थी , किंतु हमने भारत का समर्थन करने का निर्णय लिया , यद्यपि सुरक्षा परिषद् में मैं मानता हूं कि वहां बहुमत था किंतु महासभा प्रमुख निकाय है और हम लगातार मतदान कर रहे हैं और एक मत से, एक के बाद दूसरे दौर के मतदान से संख्या में बढ़ोतरी हो रही है, इसलिए एक समय में वे यह दिखाना चाहते हैं कि हमें निश्चय ही पीछे हटना पड़ेगा। इसलिए यह एक प्रकार का सहयोग है जिसे हम सभी भारत जैसे देशों से मांग कर रहे हैं जो हमारी स्वतंत्रता संग्राम के समय से आज तक के दौरान अफ्रीका के साथ संघर्ष में साझेदारी करते रहे हैं और हम सदैव कहते हैं कि भारत एक ऐसा देश है जहां हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, क्योंकि आपके पास सभी प्रकार के संसाधन हैं और हमने आपको एक अल्पविकसित देश से विकासशील देश और विकासशील देश से विकसित देश बनते देखा है। यद्यपि आप अभी भी मानते हैं कि आप विकसित देश नहीं हैं, किंतु हम जानते हैं कि भारत इस संसार में एक महाशक्ति है और संयुक्त राष्ट्र संघ एक प्रमुख निकाय है जहां हमें वास्तव में इस संघर्ष को ले जाने की आवश्यकता है , क्योंकि एक मार्शल कहा करते थे कि ''संयुक्त राष्ट्र संघ शांति नहीं ला सकता है किंतु वह यह कर सकता है'' मैं उन्हें उद्धृत करता हूं, यह कहा गया कि ''संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हमें स्वर्ग ले जाने के लिए नहीं की गयी है बल्कि हमें नरक में से निकालने के लिए की गयी है। '' और मैं आज मानता हूं कि यही संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका है और हम सभी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे पास एक बड़ा प्रभावी संगठन है और मैं आश्वस्त हूं कि चल रही सुधार प्रक्रिया के साथ हमारे पास एक ऐसा संगठन होगा जो इस उद्देश्य को पूरा करेगा।आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

***

प्रश्नोत्तरी सत्र

महिला वक्ता: सायं की नमस्ते। मैं सुरभी हूं , मैं इस परिषद् में एक शोध अध्येता हूं। महामहिम, बहुत ही उत्कृष्ट प्रस्तुति थी। मेरा प्रश्न बहुत ही साधारण है। आपने गाम्बिया और संघर्ष के पश्चात संयुक्त राष्ट्र की भूमिका के बारे में बोला और अपने अनुभव से बोलते हुए आप संयुक्त राष्ट्र संघ को किस प्रकार देखते हैं। हम अक्सर इस बारे में बात करते हैं कि यह अनावश्यक कैसे बन गया है ; और संयुक्त राष्ट्र संघ में सुधार की आवश्यकता है। इसलिए , गाम्बिया के अनुभव से आप वर्तमान बहुपक्षीय व्यवस्था को देखते हैं और इसमें सुधार की आवश्यकता के बारे में बात करते हैं?

पुरूष वक्ता: जी, मैं डॉ. सरबजीत दुदेजा हूं। महामहिम क्या आप तानाशाही के दौरान और लोकतंत्र के आने के पश्चात के अनुभव को हमारे साथ साझा कर सकते हैं ? मानव जीवन में कितना परिवर्तन आया है, चाहे हमारा सामान्य जीवन हो अथवा सामान्य लोगों का जीवन और विशेषकर महिलाओं के जीवन में?क्या उनमें बहुत अधिक बदलाव आया है अथवा वही चीजें हो रही हैं?

महिला वक्ता:पीठासीन अधिकारी आपका धन्यवाद। मेरा प्रश्न थोड़ा इस क्षेत्र से जुड़ा हुआ है विशेषकर आतंकवाद से जिसे हम पश्चिमी अफ्रीका में देख रहे हैं। और चूंकि यह विषय बहुपक्षीयवाद से संबंधित है , हमने देखा है कि आतंकवाद के मुद्दे के समाधान के लिए बहुपक्षीय प्रयास किए गए हैं , विशेषकर बहुपक्षीय संयुक्त कृतक बल के संबंध में। आप किस प्रकार मानते हैं कि यह प्रभावी रहा है अथवा इसमें अभी भी कोई प्रगति नहीं हुई है?

(पी): आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। परिषद् के शोध अध्येता के प्रथम प्रश्न के संबंध में मैं कहना चाहूंगा कि गाम्बिया संयुक्त राष्ट्र संघ को एक अनावश्यक संगठन के रूप में नहीं देखेगा क्योंकि जैसा कि मैंने कहा कि आप जानते हैं कि एक संपूर्ण दुनिया में गाम्बिया को इसकी धारणीय शांति संबंधी एजेंडे के लिए महासचिव द्वारा भी एक उदाहरण के तौर पर देखा जाता है। क्योंकि गाम्बिया में जैसा कि मैंने कहा कि संघर्ष के बाद गतिरोध के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ ने सेनाओं को भेजने और ईसीओडब्लूएएस के हस्तक्षेप के समर्थन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की सहायता के बिना बहुत ही कठिन होता। और बाद में जब संयुक्त राष्ट्र ने हस्तक्षेप किया और किसी जटिल व थकाने वाली प्रक्रिया के बिना ही राजनीतिक विभाग के हस्तक्षेत्र के तत्काल बाद

इस प्रक्रिया को शुरू किया। और आज , गाम्बिया में जो हुआ उसे ठोस रूप में करने के लिए इन सुधारों पर हस्ताक्षर किए गए क्योंकि वहां आपके पास इन दो भिन्न निकायों के बीच कोई खत्ती नहीं है, क्योंकि आपकी किसी देश में संयुक्त राष्ट्र की प्रतिस्पर्धी एजेंसियों हैं जहां आपको कई प्रक्रियाओं को पूरा करना होता है ताकि उन निधियों तक पहुंच बनायी जा सके जिससे कि अपने कार्य के कार्यान्वयन में आप समर्थ हों। किंतु , गाम्बिया के मामले में एक बेहतर दुनिया में , राजनीतिक विभाग प्रमुख के आगमन के तत्काल बाद , राजनीतिक मामले विभाग प्रमुख आए और वहां से उन्होंने घोषणा की कि सहायता मिलेगी, शांति स्थापना आयोग और शांति स्थापना सहयोग कार्यालय द्वारा अनुसरण किए जाने के तत्काल बाद। और धन को तितर-बितर किया गया और हमने इस संपूर्ण प्रक्रिया को शुरू किया। इसलिए , कम से कम गाम्बिया के मामले में हमने एक बड़ा प्रभावी संगठन देखा है ; और मैं मानता हूं कि संयुक्त राष्ट्र संघ के समर्थन और ईसीओडब्लूएएस के हस्तक्षेप के बिना, स्थिति बड़ी भयावह होती।

जहां तक तानाशाही के पूर्व और बाद में गाम्बिया का प्रश्न है , आप जानते हैं कि हमारे गाम्बिया में तानाशाही का दुर्बल प्रभाव रहा है जहां हर चीज व्यक्तिगत सनक के चारों ओर होता है और जहां हर व्यक्ति एक व्यक्ति को खुश रखने की कोशिश करता है और एक समय तो आपको आश्चर्य होगा कि लोगों को क्या हो रहा है क्योंकि हर काम जो आप करते हैं वह एक व्यक्ति को संतुष्ट करने के लिए होता है और आपके पास पिरामिड जैसी एक प्रणाली है जहां हर कार्य का निर्णय एक व्यक्ति के द्वारा किया जाता है और इसे डर के माहौल द्वारा बनाए रखा जाता है और इसलिए मैं इसके दुर्बल प्रभाव के बारे में बात कर रहा हूं। और आज गाम्बिया में आपके पास....। किंतु इसके पूर्व की आपलोगों में सामान्य बातचीत हो क्योंकि आपको यह नहीं पता कि यह गुप्त पुलिस के लिए कार्य कर रहा है अथवा आपको अगले दिन गिरफ्तार किया जाएगा। आज लोग सोशल मीडियापर और गलियों में डर के बिना बातचीत कर रहे हैं। वे उन्हें पीछे से देख भी नहीं रहे हैं कि क्या कोई उन पर नजर रखे हुए है या नहीं, किंतु यह भी खतरनाक है। क्योंकि व्यवस्था के बदलने के बाद लोग यह मानते हैं कि रातों रात जीवन में बदलाव आ जाएगा, यह नहीं सोचते हैं कि यह एक देश है जहां संसाधन बहुत कम है। लोगों ने बहुत आशा के साथ बदलाव किया। इसलिए , आज तक तथ्य यह है कि सरकार आशाओं की बंदोबस्ती कर काम चला रही है , क्योंकि हम ब्रुसेल्स गए , वहां बड़े वायदे के साथ एक सफल दाता सम्मेलन हुआ। और जब हम ब्रुसेल्स से लौटे तो लोगों ने सोचा कि हम पैसे लेकर आ रहे हैं, वे इससे अनभिज्ञ थे कि लोग दाता देशों की मेहनत के बारे में बात कर रहे हैं। किंतु रेहनदाता की भी मेहनत है। क्योंकि आप कई सम्मेलनों में जाते हैं जहां

मिलियन, बिलियन रेहन रखने वाले लोग हैं किंतु अंत में आपके पास धन नहीं आता है किंतु लोग इस बात को नहीं समझेंगे। एक छोटी सी कहानी , दाता देशों के सम्मेलन के तत्काल बाद हमारा एक कार्यक्रम था , मैं मानता हूं कि यह डेलावेयर में कहीं था और किसी व्यक्ति ने एक वीडियो लिया और इसे पोस्ट कर दिया और अब वे कहते हैं , ''वे हमारा पैसा खा रहे हैं।'', ये वे पैसे हैं जो उन्हें ब्रुसेल्स से प्राप्त हुए हैं। और जब राष्ट्रपति सुरक्षा घेरे में आ रहे थे , उन्होंने एक काली कार देखी , उन्होंने कहा, ''पैसा उसी कार में है'', वे यह नहीं जानते थे कि अब तक हम पैसे मांग रहे थे , हम रेहने के पीछे भाग रहे हैं, इस उम्मीद के साथ कि लोग उस वचन को पूरा करेंगे ताकि हम कम से कम कुछ सपनों को पूरा कर सकें और उसके बाद उन्हें लागू कर सकें , उन कार्यों को ठोस कार्रवाई में बदलेंगे जो हमारी राष्ट्रीय विकास योजना का हिस्सा है। और तीसरा प्रश्न?

पुरूष वक्ता:महिला अधिकारों के संदर्भ में क्या है?

(पी): आप जानते हैं कि गाम्बिया में महिलाओं की दशा , महिला दासों अथवा महिलाओं की दशा पर मेरे लिए चर्चा अफ्रीका में एक गलत चर्चा है। यह उपनिवेशवाद और इन कुछ धर्मों की वजह से आया है क्योंकि इससे पूर्व अफ्रीकी महिलाओं का इस समाज में गौरवशाली स्थान था। हमारे यहां महारानी थी जैसे बाआले की महारानी आब्रापोकोउ , महारानी एना जिंगा , राजनीतिक जीवन में भी महिलाओं की भागीदारी थी। धर्म और उपनिवेशवाद के साथ ही वे हाशिए पर आ गईं किंतु गाम्बियाई महिलाएं इस संघर्ष में अग्रणी रही हैं और वे बहुत ही मुखर होकर बोलने वाली रही हैं , और मैं मानता हूं कि वे भी इन परिवर्तनों में बड़ी भूमिका निभा रही हैं। क्योंकि किसी समय वे कह रहे थे कि लोग इस व्यक्ति से भयभीत थे। मैं उसका यहां उल्लेख नहीं करना चाहूंगा , बल्कि एक दिन जब मेरी अपने युवा सहयोगी के साथ बातचीत हो रही थी , और उसने मुझसे कहा, आप जानते हैं यहां इस देश में केवल एक एक ही पैजामा है और इसे केवल एक व्यक्ति ही पहन रहा है। मैंने बेईज्जती महसूस की किंतु एक समय मैंने कहा , ठीक है उसका कहना सही हो, क्योंकि, मेरा तात्पर्य है, ऐसा है कि एक आदमी ही पूरे देश को नियंत्रित कर रहा है। किंतु जिस दिन महिलाओं ने उससे संघर्ष का निर्णय लिया, और हमारी प्रथम महिला राष्ट्रपति उम्मीदवार बनी , और जो स्वर उन्होंने खड़ा किया , उससे समाज हिल गया, और उसके बाद लोगों को यह भी पता चला कि हमारे लिए यह उठ खड़े होने का समय है। इसलिए महिलाओं ने अगुवाई की और सारा श्रेय उन्हें ही जाता है। श्री सेकी आपका धन्यवाद..., और महिला कार्य मंत्रालय संबंधी एक नया मंत्रालय सृजित किया गया है और अभी-अभी एक मंत्री की नियुक्ति की गयी है , पूरे समय यह मंत्रालय

उपराष्ट्रपति कार्यालय के अधीन रहा किंतु मैं सोचता हूं कि पिछले सप्ताह ही एक ऊर्जावान महिला को महिला कार्य मंत्रालय के मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया है। और तीसरा प्रश्न?

पुरूष वक्ता: उच्चायुक्त एक महिला है।

(पी) जी हां, और हमारे सबसे ऊर्जावान राजदूतों में से एक... और, आतंकवाद से लड़ाई में सहयोग। मैं मानता हूं कि यह बहुत प्रभावी सिद्ध हुआ है , आप जानते हैं आज हमारे यहां असममित संघर्ष चल रहा है। हम उन दुश्मनों से निपट रहे हैं जो आपके साथ सोते , खाते, हंसते हैं और रात्री में वे आपके पास आएंगे और आपको आपकी नींद हराम करेंगे। आज, हमारे पास हमारी अपनी गुप्तचर सेवाओं का प्रभावी सहयोग है , क्योंकि यही एक तरीका है, एक रास्ता है कि आप उनका पता लगा सकते हैं , क्योंकि यह कोई परंपरागत युद्ध नहीं है बल्कि क्षेत्रीय ब्लॉक और बहुपक्षीय साझेदार वास्तव में सहायता कर रहे हैं। स्थिति का समाधान नहीं किया गया है बल्कि कम से कम उनके बिना हम बड़े अव्यवस्थित और गंभीर स्थिति में होते। इसलिए , मैं मानता हूं कि यह प्रभावी सिद्ध होगा। जिस युद्ध में हम फंसे हुए हैं, उसे हमने अभी जीता नहीं है। यह संघर्ष अभी तक जारी है किंतु हम लड़ते रहेंगे।

पुरूष वक्ता:हमारे पास दो या तीन प्रश्न हेतु दूसरे दौर का समय है। वह महिला , वहां, पीछे और तीसरा.....

महिला वक्ता: मेरा नाम कांची बत्रा है और मैं डिप्लोमेटिक मैग्जिन से हूं। महामहिम, हम सभी इस बात से अवगत हैं कि आपका देश बड़े प्यार से अफ्रीका के मुस्कान तट के नाम से जाना जाता है। मैं यह समझना चाहती हूं कि भारत और गाम्बिया के बीच उदार कूटनीति को बढ़ाने के लिए क्या किया गया है अथवा क्या किया जा सकता है **?** धन्यवाद।

पुरूष वक्ता: मेरा नाम यारूनिंगम है और मैं दिल्ली विश्वविद्यालय से हूं। मैं यहा पढ़ा रहा हूं। महामहिम, मैं आपसे केवल एक साधारण प्रश्न पूछना चाहता हूं। आपने बड़े स्पष्ट रूप से कहा कि भारत आज की दुनिया की एक शक्ति है। भारत की स्थिति में इतना उत्थान हुआ है कि हमें दुनिया में एक उभरते हुए राष्ट्र के रूप में माना जा रहा है। किंतु मैं केवल आपसे यह पूछना चाहूंगा कि क्या आप अफ्रीका विशेषकर आपके देश में शांति स्थापित करने, निर्माण करने और इसे बनाए रखने में भारत की भूमिका से संतुष्ट हैं **?**

यदि नहीं तो क्या ऐसा कोई क्षेत्र है जहां आप भारत से अफ्रीमा में शांति स्थापना में और अधिक योगदान की अपेक्षा कर रहे हैं**?**

पुरूष वक्ता: असलाम अलेकुम। मेरा नाम आईबोउबॉय है, मैं सेनेगल का राजदूत हूं। जैसा कि आप जानते हैं कि मैं फ्रैंच भाषा बोलने वाला हूं , किंतु मैं कोशिश करूंगा कि अपना प्रश्न मैं अग्रेजी में रखूं। ताकि हर कोई इसे समझ सके कि मैं सेनेगल और गाम्बिया के बीच इस बैठक में शिरकत कर कितना खुश हूं। गाम्बिया में, यद्यपि हम दो देश हैं, किंतु सार रूप में हम एक ही लोग हैं। हर दिन हमारे भाई और बहन सीमा पार करते हैं, हमारे दोनों देशाके बीच बड़ा मजबूत संबंध है , इसलिए जैसा कि कहा गया कि वर्तमान स्थिति के पूर्व मेरे मंत्री की स्थिति बहुत कठिन थी। इसलिए , यह कठिन स्थिति हमसे पीछे छूट गयी है। माननीय मंत्री आपको बधाई। मैं अपना मंत्री कह सकता हूं। आपके सूचनाप्रद हस्तक्षेप के लिए आपका धन्यवाद। मैं आश्वस्त हूं कि हमलोगों में से कई लोगों ने गाम्बिया में इस इस चुनाव के बाद की स्थिति से बहुत कुछ सीखा है। श्रीमान मंत्री जी मेरा एक बड़ा छोटा प्रश्न है और इस बैठक के बाद हम फ्रेंच में बातचीत करेंगे , मैं आपके साथ बातचीत करने में अधिक सहज रहूंगा। सीधे सादे ढ़ंग से कहें तो हमारे क्षेत्र में शांति स्थापना में अभी हमें किन मूल्यों पर अधिक ध्यान देना चाहिए ?आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

पुरूष वक्ता:तीन प्रश्न हैं। मैं उस पत्रकार के प्रश्न से शुरू करूंगा। मैं मानता हूं कि यह प्रश्न आपको हमारे राजदूत या हमारे उच्चायोग से पूछना चाहिए था कि वे इस मुद्दे पर क्या कर रही हैं**?** हमारे गाम्बिया में अच्छी खासी संख्या में भारतीय लोग रह रहे हैं, कार्य कर रहे हैं और कारोबार कर रहे है और लंबे समय के लिए गाम्बिया एक अंग्रेजी बोलने वाला देश होने के कारण हमारे उच्च विद्यालयों में बहुत सारे भारतीय शिक्षक हैं और हमारे देश के कुछ नेताओं को भारतीयों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। मैं मानता हूं कि एक समय मैंने मालदीव के एक पूर्व राष्ट्रपति से मुलाकात की थी। किंतु , उसके बाद हमने सोचा कि वे एक भारतीय हैं , मेरा मतलब भारत से, क्योंकि उनके पास एक सुपर बाजार है। और सेनेगल , जिसमें गाम्बिया शामिल है , में भारतीय राजदूत , जो उनमें से एक हैं, जो आज एक वरिष्ठ अंतरराष्ट्रीय लोक सेवक हैं, अतुल खरे, मेरे एक बहुत अच्छे मित्र हैा जो संयुक्त राष्ट्र अवर महासचिव हैं , ने मुझसे कहा कि वे गाम्बिया आया करते थे ताकि अंग्रेजी पुस्तकों को खरीद सकें क्योंकि तब हमारा बंजुल में पुस्तक की एक छोटी दुकान होती थी। इसलिए, आज मैं मानता हूं कि इसका दायित्व मेरे उपर और उच्चायोग पर है कि हम यह सुनिश्चित करें कि भारत और गाम्बिया के बीच संबंध और मजबूत हों

और उसके बाद हमारे यहां गाम्बिया में और भारतीय आ रहे हैं। किंतु मेरा विश्वास करें , जो वहां रह रहे हैं , बड़े आराम से रह रहे हैं। मैं ऐसी किसी समस्या के बारे में नहीं जानता, वे संबद्ध हैं और अपना कार्य कर रहे हैं। किंतु मैं मानता हूं , यह महत्वपूर्ण है कि हम भारतीय पर्यटकों को भी प्रोत्साहित करें कि वे गाम्बिया आएं। यह लोगों के बीच एक प्रकार की कूटनीति है जो बहुत महत्वपूर्ण है और इससे हमारे संबंध मजबूत होंगे , और मैं मानता हूं कि बेहतर भविष्य के लिए हमें इसे प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इसलिए राजदूत, उच्चायोग जी आपके पास एक कार्य है। दूसरे प्रश्न के संबंध में मुझे स्मरण नहीं है।

पुरूष वक्ता: क्या आप इसे दुहरा सकते हैं?

पुरूष वक्ता: जी हां।

पुरूष वक्ता: मैं भारत की भूमिका के बारे में पूछ रहा था और आपको कितनी आशा है**?**

पुरूष वक्ता:आपका धन्यवाद, माफ करिएगा, आपको पता है मैंने बहुत देर तक विमान में यात्रा कर वहां से यहां आया हूं। भारत अफ्रीका में कई मुश्किल क्षेत्रों में यथा शांति अभियान में शामिल है, किंतु मैं मानता हूं कि जिस स्थिति और संदर्भ में भारत अफ्रीका में है, मैं मानता हूं कि वह लोगों को एकजुट करने और स्थायी शांति लाने के कार्य में और प्रभावी भूमिका अदा कर सकता है क्योंकि भारत और अफ्रीका एक आवाज हैं जिस पर भरोसा किए जाने की आवश्यकता है। इस प्रश्न पर कि हमें इन मूल्यों के साथ क्या करना है? मैं सदा ही यह कहता हूं कि यह महत्वपूर्ण है कि विवादों के समाधान के हमारे परंपरागत तंत्र को लेते हैं और संयुक्त राष्ट्र में भी। इसलिए गाम्बिया में मामले में मैं मानता हूं कि हम भाग्यशाली थे क्योंकि लोगों ने हमारी बातें सुनी थीं , क्योंकि हमलोगों से अधिक हमें और कोई प्यार नहीं करता है , और हमारे देश और हमारे महाद्वीप को हमसे बेहतर और कोई नहीं जानता है।जहां तक गाम्बिया और सेनेगल का संबंध है , मैं सदा कहता हूं कि यह एक राष्ट्र और दो राज्य हैं ; और इसलिए मुझे सदा इस तथ्य में विश्वास है कि हमारी कूटनीति तथ्यों और विश्वास पर आधारित होनी चाहिए। क्योंकि केवल वह देश ही पीड़ा के दौर में ..... **(अन्य भाषा)**; और उसके लिए हमें वाक्पटुता से परे जाना होगा, हमें यह सुनिश्चित करना है कि हम इन सीमाओं जैसे कृत्रिम बाधाओं से परे जाना है। मेरे पास एक प्रोफेसर है.... **(अन्य भाषा)**...

पुरूष वक्ता: इन सभी प्रश्नों को ध्यान से लेने और हमें कुछ बहुत महत्वपूर्ण पहलुओं जिन्हें हमारे श्रोताओं ने प्रश्नकाल के दौरान उठाया , पर जानकारी देने के लिए महामहिम आपका धन्यवाद। मैं इसमें और कुछ नहीं जोड़ना चाहूंगा सिवाए इसके कि एक व्यक्तिगत टिप्पणी में मैं चाहूंगा कि अपने अगले दौरे में हम एक ऐसे विषय पर बातचीत करना चाहेंगे जो बहुत ही दिलचस्प है , व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए , क्योंकि मांडिंगा के विश्व इतिहासकार के मिथक और रहस्यों पर आपका शोध बहुत ही अच्छा है। मैं ऐसा इसलिए बोल रहा हूं क्योंकि भारत में मौखिक इतिहास की बड़ी परंपरा रही है। हजारों वर्षों के इतिहास पर हमारे सभी महान दार्शनिक विचार विश्व परंपराओं से होकर गुजरा है। इसलिए मैं आपसे वाद कर सकता हूं, मैं यह देखने के लिए उच्चायोग के संपर्क में रहूंगा कि क्या हम विश्व परंपराओं पर आपके कुछ विद्वानों को आईसीडब्लूए अथवा आब्जर्वर अनुसंधान प्रतिष्ठान में भी ला सकते हैं और उन विषयों पर एक संगोष्ठी आयोजित कर सकते हैं। मैं मानता हूं कि हम एक दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं ; और यदि कोई और टिप्पणी न हो तो देवियों और सज्जनों, कृपया.....

(पी): क्या मैं कुछ कह सकता हूं?

पुरूष वक्ता: जी हां, प्लीज।

(पी): मुझे इस कार्यक्रम के लिए आने में बड़ी खुशी होगी ; आपको पता है कि भारत के पहले दौरे के दौरान मैंने कुरूक्षेत्र जाने पर जोर दिया ताकि यह देख सकूं कि महाभारत का युद्ध कहां लड़ा गया था, क्योंकि मैं मध्य युगीन और महाभारत काल के साहित्य पर शोध कार्य करने के नेटवर्क का हिस्सा था। इसलिए , मुझे बहुत खुशी होगी, और अफ्रीका में भी आपको जानकारी होगी कि अफ्रीकियों के बारे में आपको अन्यों के बारे में सब कुछ जानकारी है किंतु हमारे बारे में थोड़ा थोड़ा। इसलिए यह एक दुखद बात है। मैं सदा ही लोगों को उदाहरण देता हूं जहां भी जब भी हम मानवाधिकार की बात करते हैं तो हम मैग्नाकार्टा .... (**अन्य भाषा)**.... का संदर्भ देता हूं जबकि आपके पास कुछ ऐसा है.... (**अन्य भाषा**)..... किंतु हमें इसके बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं है। और सेंघोर कहा करते थे, शेनेगल के राष्ट्रपति .... (अन्य भाषा)... हमारे पास बोल उठने वाले ऐसे स्मारक हैं जो शांत खड़े हैं। इसलिए , यह जानने हेतु शोध करने का दायित्व हम पर है कि कहां क्या है, उसमें क्या रखा है जो उस बोल उठने वाले स्मारक हैं। मुझे उस पर चर्चा करने में बहुत खुशी होगी। आपका धन्यवाद।

पुरूष वक्ता: वास्तव में यह एक ऐसा समय है कि हमारी अपनी वर्णात्मक कहानियां हैं। हम पश्चिमी मीडिया के माध्यम से एक दूसरे के बारे में सीखते रहे हैं ; और मैं समझता हूं कि अफ्रीका एक ऐसा महादेश है जहां लाखों ऐसी कहावते हैं जो पुरानी परंपराओं का ज्ञान है। और चूंकि आपने इसका उल्लेख किया कि एक दूसरे की अपेक्षा पश्चिमी जगत से कितना कुछ सीखा है , मुझे एक अफ्रीकी कहावत स्मरण आता है जिसे मैं बताना चाहूंगा। इस कहावत में है कि जब तक शेर अपनी कहानी नहीं लिखता , शिकार की कहानी शिकारी को महिमामंडित करेगी। किंतु अब यह बदल रहा है। अब शेर अपनी स्वयं की कहानी कह रहे हैं। इसलिए , इसके साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं और महानिदेशक को मंच देता हूं।

महिलावक्ता: आईसीडब्लूए की ओर से मैं महामहिम डॉ. मामाडोउ टंगारा को उनके इस गहरी पहुंच वाले व्याख्यान के लिए धन्यवाद देना चाहूंगी। मैं राजदूत एच.एच.एस. विश्वनाथन को इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करने और डीजी आईसीडब्लूए को उनकी टिप्पणी के लिए भी धन्यवाद देना चाहूंगी। मैं इस व्याख्यान में भाग लेने हेतु समय निकालने के लिए श्रोताओं को भी धन्यवाद देना चाहूंगी। समाप्त करने से पूर्व मैं डीजी आईसीडब्लूए को अपने अतिविशिष्ट अतिथि को हमारे प्रकाशन के विमोचन करने का अनुरोध करूंगी।

(पी): आपका धन्यवाद।

***